वैदिक साहित्य 1500 ई0पू0 से 600 ई0पू0

वैदिक साहित्य में चार वेद एवं उनकी संहिताओं, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषदों एवं वेदांगों को शामिल किया जाता है।
वेदों की संख्या चार है- ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद।
ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद विश्व के प्रथम प्रमाणिक ग्रन्थ है।
वेदों को अपौरुषेय कहा गया है। गुरु द्वारा शिष्यों को मौखिक रूप से कंठस्त कराने के कारण वेदों को "श्रुति" की संज्ञा दी गई है।

ऋग्वेद 1500 ई0पू0 से 1000 ई0पू0

1 ऋग्वेद देवताओं की स्तुति से सम्बंधित रचनाओं का संग्रह है।

2 यह 10 मंडलों में विभक्त है। इसमे 2 से 7 तक के मंडल प्राचीनतम माने जाते हैं। प्रथम एवं दशम मंडल बाद में जोड़े गए हैं। इसमें 1028 सूक्त हैं।

3 इसकी भाषा ***पद्यात्मक*** है।

4 ऋग्वेद में 33 प्रकार के देवों (दिव्य गुणों से युक्त पदार्थो) का उल्लेख मिलता है।

5 प्रसिद्ध गायत्री मंत्र जो सूर्य से सम्बंधित देवी गायत्री को संबोधित है, ऋग्वेद में सर्वप्रथम प्राप्त होता है।

6 ' असतो मा सद्गमय ' वाक्य ऋग्वेद से लिया गया है।

7 ऋग्वेद में मंत्र को कंठस्त करने में स्त्रियों के नाम भी मिलते हैं, जिनमें प्रमुख हैं- लोपामुद्रा, घोषा, शाची, पौलोमी एवं काक्षावृती आदि

8 इसके पुरोहित क नाम होत्री है।

यजुर्वेद उत्तर वैदिक काल 1000 ई0पू0 से 600 ई0पू0

यजु का अर्थ होता है यज्ञ।ईसामाए धनुर्यवीद्या का उल्लेख ह।
यजुर्वेद वेद में यज्ञ की विधियों का वर्णन किया गया है।
इसमे मंत्रों का संकलन आनुष्ठानिक यज्ञ के समय सस्तर पाठ करने के उद्देश्य से किया गया है।
इसमे मंत्रों के साथ साथ धार्मिक अनुष्ठानों का भी विवरण है जिसे मंत्रोच्चारण के साथ संपादित किए जाने का विधान सुझाया गया है।
यजुर्वेद की भाषा पद्यात्मक एवं गद्यात्मक दोनों है।
यजुर्वेद की दो शाखाएं हैं- कृष्ण यजुर्वेद तथा शुक्ल यजुर्वेद।
कृष्ण यजुर्वेद की चार शाखाएं हैं- मैत्रायणी संहिता, काठक संहिता, कपिन्थल तथा संहिता। शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएं हैं- मध्यान्दीन तथा कण्व संहिता।
यह 40 अध्याय में विभाजित है।

RAMKESHeducation.com

इसी ग्रन्थ में पहली बार राजसूय तथा वाजपेय जैसे दो राजकीय समारोह का उल्लेख है।

सामवेद उत्तर वैदिक काल 1000 ई0पू0 से 600 ई0पू0

सामवेद की रचना ऋग्वेद में दिए गए मंत्रों को गाने योग्य बनाने हेतु की गयी थी।

इसमे 1810 छंद हैं जिनमें 75 को छोड़कर शेष सभी ऋग्वेद में उल्लेखित हैं।

सामवेद तीन शाखाओं में विभक्त है- कौथुम, राणायनीय और जैमनीय।

सामवेद को भारत की प्रथम संगीतात्मक पुस्तक होने का गौरव प्राप्त है।

ब्राह्मण - वैदिक मन्त्रों तथा संहिताओं को ब्रह्म कहा गया है | वही ब्रह्म का विस्तारितरुपको ब्राह्मण कहा गया है। पुरातन ब्राह्मण में ऐतरेय, शतपथ, पंचविश, तैतरीय आदि विशेष महत्वपूर्ण हैं। महर्षि याज्ञवल्क्यने मन्त्र सहित ब्राह्मण ग्रंथों की उपदेश आदित्यसे प्राप्त किया है। संहिताओं के अन्तर्गत कर्मकांड की जो विधि उपदिष्ट है ब्राह्मण मे उसी की सप्रमाण व्याख्या देखने को मिलता है। प्राचीन परम्परा मे आश्रमानुरुप वेदों का पाठ करने की विधि थी। अतः ब्रह्मचारी ऋचाओं ही पाठ करते थे ,गृहस्थ ब्राह्मणों का, वानप्रस्थ आरण्यकों और संन्यासी उपनिषदों का। गार्हस्थ्यधर्म का मननीय वेदभाग ही ब्राह्मण है।

यह मुख्यतः गद्य शैली में उपदिष्ट है।

ब्राह्मण ग्रंथों से हमें बिम्बिसार के पूर्व की घटना का ज्ञान प्राप्त होता है।

ऐतरेय ब्राह्मण में आठ मंडल हैं और पाँच अध्याय हैं। इसे पंजिका भी कहा जाता है।

ऐतरेय ब्राह्मण में राज्याभिषेक के नियम प्राप्त होते हैं।

तैतरीय ब्राह्मण कृष्णयजुर्वेदका ब्राह्मण है।

शतपथ ब्राह्मण में १०० अध्याय,१४ काण्ड और ४३८ ब्राह्मण है। गान्धार, शल्य, कैकय, कुरु, पांचाल, कोसल, विदेह आदि स्थलों का भी उल्लेख होता है।

शतपथ ब्राह्मण ऐतिहासिक दृष्टी से सर्वाधिक महत्वपूर्ण ब्राह्मण है।

पंचविंश/ षड्विंश ब्राह्मण सामवेद सम्बद्ध ब्राह्मण है।

सर्वाधिक परवर्ती ब्राह्मण **गोपथ** है।

RAMKESHeducation.com

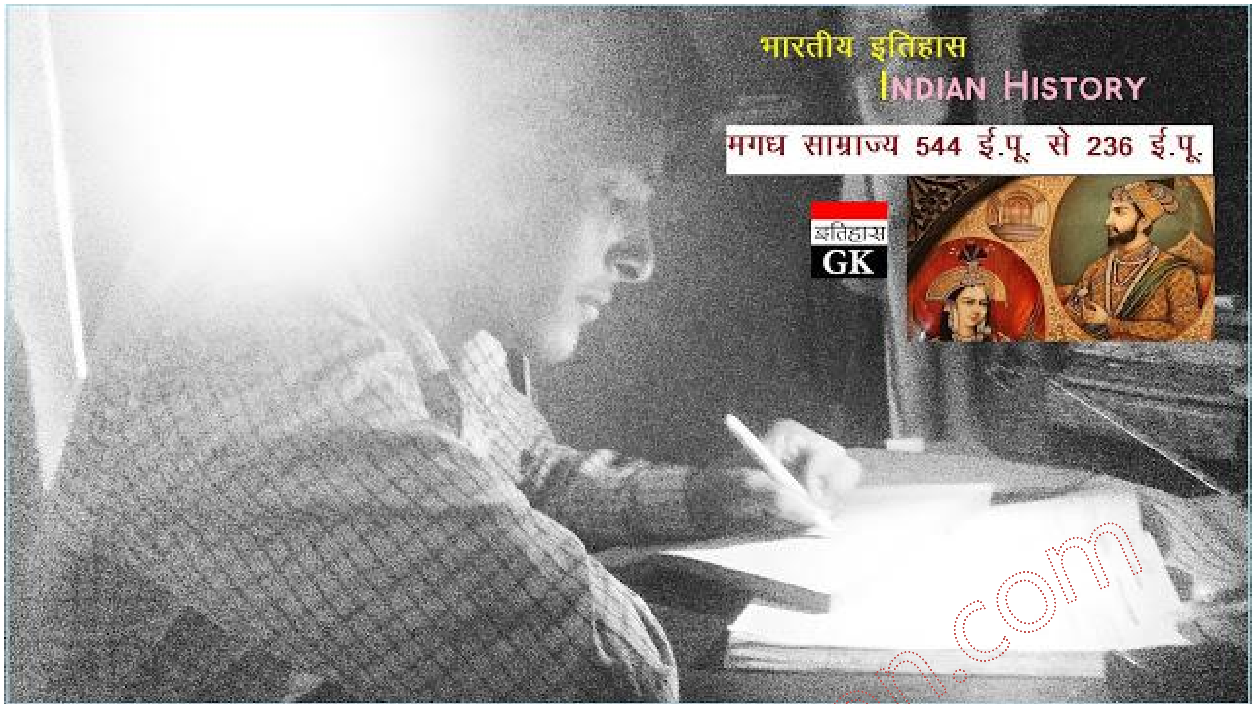

आरण्यक - आरण्यक वेदों का वह भाग है जो गृहस्थाश्रम त्याग उपरान्त वानप्रस्थ लोग जंगल में पाठ किया करते थे | इसी कारण आरण्यक नामकरण किया गया।

इसका प्रमुख प्रतिपाद्य विषय रहस्यवाद, प्रतीकवाद, यज्ञ और पुरोहित दर्शन है।
वर्तमान में सात अरण्यक उपलब्ध हैं।
सामवेद और अथर्ववेद का कोई आरण्यक स्पष्ट और भिन्न रूप में उपलब्ध नहीं है।

उपनिषद - उपनिषद प्राचीनतम दार्शनिक विचारों का संग्रह है। उपनिषदों में 'वृहदारण्यक' तथा 'छान्दोन्य', सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। इन ग्रन्थों से बिम्बिसार के पूर्व के भारत की अवस्था जानी जा सकती है। परीक्षित, उनके पुत्र जनमेजय तथा पश्चात कालीन राजाओं का उल्लेख इन्हीं उपनिषदों में किया गया है। इन्हीं उपनिषदों से यह स्पष्ट होता है कि आर्यों का दर्शन विश्व के अन्य सभ्य देशों के दर्शन से सर्वोत्तम तथा अधिक आगे था। आर्यों के आध्यात्मिक विकास, प्राचीनतम धार्मिक अवस्था और चिन्तन के जीते-जागते जीवन्त उदाहरण इन्हीं उपनिषदों में मिलते हैं। उपनिषदों की रचना संभवतः बुद्ध के काल में हुई, क्योंकि भौतिक इच्छाओं पर सर्वप्रथम आध्यात्मिक उन्नति की महत्ता स्थापित करने का प्रयास बौद्ध और जैन धर्मों के विकास की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप हुआ।

कुल उपनिषदों की संख्या 108 है।
मुख्य रूप से शास्वत आत्मा, ब्रह्म, आत्मा-परमात्मा के बीच सम्बन्ध तथा विश्व की उत्पत्ति से सम्बंधित रहस्यवादी सिधान्तों का विवरण दिया गया है।
"सत्यमेव जयते" **मुण्डकोपनिषद** से लिया गया है।
मैत्रायणी उपनिषद में त्रिमूर्ति और चार्तु आश्रम सिद्धांत का उल्लेख है।

RAMKESHeducation.com

वेदांग - युगान्तर में वैदिक अध्ययन के लिए छः विधाओं (शाखाओं) का जन्म हुआ जिन्हें 'वेदांग' कहते हैं। वेदांग का शाब्दिक अर्थ है वेदों का अंग, तथापि इस साहित्य के पौरूषेय होने के कारण श्रुति साहित्य से पृथक ही गिना जाता है। वेदांग को स्मृति भी कहा जाता है, क्योंकि यह मनुष्यों की कृति मानी जाती है। वेदांग सूत्र के रूप में हैं इसमें कम शब्दों में अधिक तथ्य रखने का प्रयास किया गया है।

वेदांग की संख्या 6 है

- **शिक्षा**- स्वर ज्ञान
- **कल्प**- धार्मिक रीति एवं पद्धति
- **निरुक्त**- शब्द व्युत्पत्ति शास्त्र
- **व्याकरण**- व्याकरण
- **छंद**- छंद शास्त्र
- **ज्योतिष**- खगोल विज्ञान

सूत्र साहित्य - सूत्र साहित्य वैदिक साहित्य का अंग है। उसे समझने में सहायक भी है।

ब्रह्म सूत्र-भगवान विष्णु के अवतार भगवान श्री वेद व्यास ने वेदांत पर यह परमगूढ ग्रंथ लिखा है जिसमें परमसत्ता, परमात्मा, परमसत्य, ब्रह्मस्वरूप ईश्वर तथा उनके द्वारा सृष्टि और ब्रह्मतत्त्व वर गूढ विवेचना की गई है।इसका भाष्य श्रीमद् आदिशंकराचार्य जी ने भगवान व्यास जी के कहने पर लिखा था।

कल्प सूत्र- ऐतिहासिक दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण। वेदों का हस्त स्थानीय वेदांग।

श्रोत सूत्र- महायज्ञ से सम्बंधित विस्तृत विधि-विधानों की व्याख्या। वेदांग कल्पसूत्र का पहला भाग।

स्मार्तसूत्र - षोडश संस्कारों का विधान करने वाला कल्प का दुसरा भाग

शुल्बसूत्र- यज्ञ स्थल तथा अग्निवेदी के निर्माण तथा माप से सम्बंधित नियम इसमें हैं। इसमें भारतीय ज्यामिति का प्रारम्भिक रूप दिखाई देता है। कल्प का तीसरा भाग।

धर्म सूत्र- इसमें सामाजिक धार्मिक कानून तथा आचार संहिता है। कल्प का चौथा भाग

गृह्य सूत्र- परुवारिक संस्कारों, उत्सवों तथा वैयक्तिक यज्ञों से सम्बंधित विधि-विधानों की चर्चा है।

राजनीतिक स्थिति RAMKESHrawat

ऋग्वैदिक काल मुख्यतः एक कबीलाई व्यवस्था वाला शासन था जिसमें सैनिक भावना प्रमुख थी। राजा को गोमत भी कहा जाता था।

वैदिक काल में राजतंत्रात्मक प्रणाली प्रचलित थी। इसमें शासन का प्रमुख राजा होता था।
राजा वंशानुगत तो होता था परन्तु जनता उसे हटा सकती थी। वह क्षेत्र विशेष का नहीं बल्कि जन विशेष का प्रधान होता था।

RAMKESHeducation.com

राजा युद्ध का नेतृत्वकर्ता था। उसे कर वसूलने का अधिकार नही था। जनता द्वारा स्वेच्छा से दिए गए भाग से उसका खर्च चलता था।

सभा, समिति तथा विदथ नामक प्रशासनिक संस्थाएं थीं।

अथर्ववेद में सभा एवं समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है। समिति का महत्वपूर्ण कार्य राजा का चुनाव करना था। समिति का प्रधान ईशान या पति कहलाता था। विदथ में स्त्री एवं पुरूष दोनों सम्मलित होते थे। नववधुओं का स्वागत, धार्मिक अनुष्ठान आदि सामाजिक कार्य विदथ में होते थे।

सभा श्रेष्ठ लोंगो की संस्था थी, समिति आम जनप्रतिनिधि सभा थी एवं विदथ सबसे प्राचीन संस्था थी। ऋग्वेद में सबसे ज्यादा बार उल्लेख विदथ का 122 बार हुआ है।

सैन्य संचालन वरात, गण व सर्ध नामक कबीलाई संगठन करते थे।

शतपथ ब्रह्मण के अनुसार अभिषेक होने पर राजा महँ बन जाता था। राजसूय यज्ञ करने वाले की उपाधि राजा तथा वाजपेय यज्ञ करने वाले की उपाधि सम्राट थी।

स्पर्श, गुप्तचरों को और पुरूप, दुर्गापति को कहा जाता था।

राजा का प्रशासनिक सहयोग पुरोहित एवं सेनानी आदि 12 रत्निन करते थे। चारागाह के प्रधान को वाज्रपति एवं लड़ाकू दलों के प्रधान को ग्रामिणी कहा जाता था।

RAMKESHeducation.com

मगध साम्राज्य ने भारत में 684 BC – 320 BC तक शासन किया | मगध साम्राज्य का दो महान काव्य रामायण और महाभारत में उल्लेख किया गया है | मगध साम्राज्य पर 544 BC से 322 BC तक शासन करने वाले तीन राजवंश थे | पहला था हर्यंका राजवंश (544 BC से 412 BC), दूसरा था शिशुनाग राजवंश (412 BC से 344 BC) और तीसरा था नन्दा राजवंश (344 BC से 322 BC)|

हर्यंका राजवंश:

हर्यंका राजवंश में तीन महत्वपूर्ण राजा थे बिंबिसार, अजातशत्रु और उदयीन

बिंबिसार (546-494 BC)

बिंबिसार ने 52 साल तक 544 BC से 492 BC तक शासन किया | इसको इसी के ही पुत्र अजातशत्रु (492-460 BC) ने बंदी बना लिया और हत्या कर दी | बिंबिसार मगध का शासक था | वह हर्यंका राजवंश से था |

वैवाहिक गठबंधन के माध्यम से इसने अपनी स्थिति और समृद्धि को मजबूत किया | इसका पहला विवाह कोशल देवी नामक महिला से कोशल परिवार में हुआ | बिंबिसार को दहेज में काशी प्रांत दिया गया |

बिंबिसार ने वैशाली के लिच्छवि परिवार की चेल्लाना नामक राजकुमारी से विवाह किया |अब इस वैवाहिक गठबंधन ने इसे उत्तरी सीमा में सुरक्षित कर दिया | बिंबिसार ने दुबारा एक और विवाह मध्य पंजाब के मद्रा के शाही परिवार की खेमा से किया |इसने अंग के ब्रह्मदत्ता को पराजित कर उसके साम्राज्य पर कब्जा कर लिया | बिंबिसार के अवन्ती राज्य के साथ अच्छे तालुक थे |

अजातशत्रु (494 -462 BC) - अजात शत्रु ने अपने पिता की हत्या कर राज्य को छीन लिया | अजात शत्रु अपने पूरे शासन काल के दौरान तेज़ विस्तार के लिए आक्रामक नीति का पालन करता रहा | इस नीति ने उसे काशी और कौशल की तरफ धकेल दिया | मगध और कौशल के बीच लंबी अशांति शुरू हो गई |कौशल के राजा को मजबूरन शांति के लिए अपनी बेटी का विवाह अजातशत्रु से करना पड़ा और उसे काशी भी दे दिया |अजातशत्रु ने वैशाली के लिच्छवियों के खिलाफ भी युद्ध की घोषणा कर दी और वैशाली गणराज्य को जीत लिया | यह युद्ध 16 साल तक चला | शुरुआत में वह जैन धर्म का अनुयायी था पर बाद में उसने बौद्ध धर्म को अपनाना शुरू कर दिया |अजातशत्रु ने कहा कि वह गौतम बुद्ध से मिला था | यह दृश्य बरहुत की मूर्तियों में दिखाया गया है | इसने कई चैत्यों और विहारों का निर्माण करवाया | वह बौद्ध की मृत्यु के बाद राजगृह में प्रथम बौद्ध परिषद में भी था |

उदयीन - उदयीन, अजातशत्रु का उत्तराधिकारी बना | इसने पाटलीपुत्र की नींव राखी और राजधानी को राजगृह से पाटलीपुत्र स्थानान्त्रित किया |
नाग –दसक हर्यंका राजवंश का अंतिम शासक था | इसे लोगों द्वारा शासन करने के लिए अयोग्य पाया गया और

उसे अपने मंत्री शिशुनाग के लिए राजगद्दी से हाथ पीछे खींचना पड़ा |

शिशुनाग राजवंश - शिशुनाग के शासन के दौरान अवन्ती राज्य को जीत लिया गया और मगध साम्राज्य के कब्जे में लिया गया | शिशुनाग का उत्तराधिकारी कालाशोक बना | उसने 383 BC में वैशाली में दूसरी बौद्ध परिषद बुलाई |
नन्दा राजवंश - नन्दा राजवंश के संस्थापक महापद्म के द्वारा शिशुनाग राजवंश के अंतिम राजा का तख़्ता पलट कर दिया गया था |
इसे सर्वक्षत्रांतक (पुराण) और उग्रसेना (एक बड़ी सेना का स्वामी) के नाम से भी जाना गया | महापद्म को पुराण में एक्राट (एकमात्र सम्राट) के नाम से भी जाना गया | यहाँ तक कि इसे भारतीय इतिहास में पहला साम्राज्य निर्माता के तौर पर जाना गया है | धन नन्द, नन्दा राजवंश

का अंतिम शासक था | इसे यूनानी पुस्तकों में अग्राम्मेस या क्षाण्ड्रेमेस भी कहा गया | इसके शासन काल के दौरान अलेक्जेंडर ने भारत पर आक्रमण किया था |

मौर्य राजवंश - प्राचीन भारत का एक शक्तिशाली एवं महान राजवंश था। इसने 137 वर्ष भारत में राज किया। इसकी स्थापना का श्रेय चन्द्रगुप्त मौर्य और उसके मन्त्री आचार्य चाणक्य को दिया जाता है, जिन्होंने नंदवंश के सम्राट घनानन्द को पराजित किया। यह साम्राज्य पूर्व में मगध राज्य में गंगा नदी के मैदानों से शुरू हुआ। इसकी राजधानी पाटलिपुत्र (अब का पटना) थी। मोर्य साम्राज्य 52 लाख वर्गकिलोमीटर तक फैला था।

मौर्य वंश की पूरी जानकारी GO RAMKESHeducation.com

मौर्य वंश की स्थापना

325 ईसापूर्व में उत्तर पश्चिमी भारत (आज के पाकिस्तान का लगभग सम्पूर्ण इलाका) सिकन्दर के क्षत्रपों का शासन था। जब सिकन्दर पंजाब पर चढ़ाई कर रहा था तो एक ब्राह्मण जिसका नाम चाणक्य था (कौटिल्य नाम से भी जाना गया तथा वास्तविक नाम विष्णुगुप्त) मगध को साम्राज्य विस्तार के लिए प्रोत्साहित करने आया। उस समय मगध अच्छा खासा शक्तिशाली था तथा उसके पड़ोसी राज्यों की आंखों का काँटा। पर तत्कालीन मगध के सम्राट घनानन्द ने उसको ठुकरा दिया। उसने कहा कि तुम एक पंडित हो और अपनी चोटी का ही ध्यान रखो "युद्ध करना राजा का काम है तुम पंडित हो सिर्फ पंडिताई करो" तभी से चाणक्य ने प्रतिज्ञा लिया की धनानंद को सबक सिखा के रहेगा।

LETEST GENERAL Knowledge visit RAMKESHeducation.com

मौर्य वंश का पतन

अशोक के उत्तराधिकारी अयोग्य निकले। इस वंश का अंतिम राजा बृहद्रथ मौर्य था। 185 ई.पू. में उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने उसकी हत्या कर डाली और शुंग वंश नाम का एक नया राजवंश आरंभ हुआ।

मौर्य वंश की सैन्य व्यवस्था

भारत में सर्वप्रथम **मौर्य वंश के शासनकाल** में ही राष्ट्रीय राजनीतिक एकता स्थापित हुइ थी। मौर्य प्रशासन में सत्ता का सुदृढ़ केन्द्रीयकरण था परन्तु राजा निरंकुश नहीं होता था। मौर्य काल में गणतन्त्र का ह्रास हुआ और राजतन्त्रात्मक व्यवस्था सुदृढ़ हुई। कौटिल्य ने राज्य सप्तांक सिद्धान्त निर्दिष्ट किया था, जिनके आधार पर

मौर्य प्रशासन और उसकी गृह तथा विदेश नीति संचालित होती थी - राजा, अमात्य जनपद, दुर्ग, कोष, सेना और, मित्र।

MP S.I. 2019 की तैयारी कैसे करें सम्पूर्ण जानकारी हिन्दी मे

सैन्य व्यवस्था छः समितियों में विभक्त सैन्य विभाग द्वारा निर्दिष्ट थी। प्रत्येक समिति में पाँच सैन्य विशेषज्ञ होते थे। पैदल सेना, अश्व सेना, गज सेना, रथ सेना तथा नौ सेना की व्यवस्था थी। सैनिक प्रबन्ध का सर्वोच्च अधिकारी अन्तपाल कहलाता था। यह सीमान्त क्षेत्रों का भी व्यवस्थापक होता था। मेगस्थनीज के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना 6 लाख पैदल, 50 हजार अश्वारोही, 9 हजार हाथी तथा 8 सौ रथों से सुसज्जित अजेय सैनिक थे।

मौर्य वंश की प्रशासन

मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) थी। इसके अतिरिक्त साम्राज्य को प्रशासन के लिए चार और प्रांतों में बांटा गया था। पूर्वी भाग की राजधानी तौसाली थी तो दक्षिणी भाग की सुवर्णगिरि। इसी प्रकार उत्तरी तथा पश्चिमी भाग की राजधानी क्रमशः तक्षशिला तथा उज्जैन (उज्जयिनी) थी। इसके अतिरिक्त समापा, इशिला तथा कौशाम्बी भी महत्वपूर्ण नगर थे। राज्य के प्रांतपालों कुमार होते थे जो स्थानीय प्रांतों के शासक थे। कुमार की मदद के लिए हर प्रांत में एक मंत्रीपरिषद तथा महामात्य होते थे। प्रांत आगे जिलों में बंटे होते थे। प्रत्येक जिला गाँव के समूहों में बंटा होता था। प्रदेशिकजिला प्रशासन का प्रधान होता था। रज्जुक जमीन को मापने का काम करता था। प्रशासन की सबसे छोटी इकाई गाँव थी जिसका प्रधान ग्रामिक कहलाता था।

मगध-साम्राज्य GK By - RAMKESHeducation

मोर्य शासक कौन कौन थे

क्र.सं.	शासक	शासन काल
1	चन्द्रगुप्त मौर्य	322 ईसा पूर्व- 298 ईसा पूर्व

2	बिन्दुसार	298 ईसा पूर्व - 272 ईसा पूर्व
3	अशोक	273 ईसा पूर्व - 232 ईसा पूर्व
4	दशरथ मौर्य	232 ईसा पूर्व- 224 ईसा पूर्व
5	सम्प्रति	224 ईसा पूर्व- 215 ईसा पूर्व
6	शालिसुक	215 ईसा पूर्व- 202 ईसा पूर्व
7	देववर्मन	202 ईसा पूर्व - 195 ईसा पूर्व
8	शतधन्वन मौर्य	195 ईसा पूर्व 187 ईसा पूर्व
9	बृहद्रथ मौर्य	187 ईसा पूर्व- 185 ईसा पूर्व

RAMKESHeducation.com

मौर्य शासकों का इतिहास

Read Extra

Visit - RAMKESHeducation

चंद्रगुप्त मौर्य

चंद्रगुप्त मौर्य (राज: 323-298 ईसा पूर्व) प्राचीन भारत में **मौर्य साम्राज्य के पहले संस्थापक** थे। वे ऐसे शासक थे जिन्होंने पुरे भारत को एक साम्राज्य के अधीन लाने में सफल रहे। उनका साम्राज्य पूर्व में बंगाल से अफगानिस्तान और बलोचिस्तान तक और पश्चिम के पकिस्तान से हिमालय और कश्मीर के उत्तरी भाग में फैला हुआ था। और साथ ही दक्षिण में प्लैटॉ तक विस्तृत था। भारतीय इतिहास में **चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल** को सबसे विशाल शासन माना जाता है।

बिन्दुसार

चन्द्रगुप्त मौर्य के पुत्र **बिन्दुसार मौर्य साम्राज्य** के अगले शासक हुवे। इतिहास में प्रसिद्ध शासक **सम्राट अशोक** बिन्दुसार के ही पुत्र थे। उन्होंने लगभग 25 सालो तक शासन किया।

सम्राट अशोक - भारत के महान शक्तिशाली समृद्ध सम्राटों में से एक थे। वे मौर्य साम्राज्य के शासक बिन्दुसार के पुत्र थे। उन्होंने लगभग 41 सालो तक शासन किया। अशोक मौर्य जो साधारणतः अशोका और अशोका - एक महान के नाम से जाने जाते है।

बृहद्रथ मौर्य

बृहधृत **मौर्य मौर्य साम्राज्य के अंतिम शासक** थे। 187-185 ईसा पूर्व तक उन्होनें शासन किया। उन्हें उनकें ही एक मंत्री पुष्यमित्र शुंग ने मार दिया था। जिसने शंग साम्राज्य स्थापित किया।

मौर्य वंश GK Questions

- चंदगुप्त के शासन विस्तार में सबसे अधिक मदद किसने की– **चाणक्य ने**
- किसकी तुलना मैकियावेली के 'प्रिंस' से की जाती है– **कौटिल्य का अर्थशास्त्र**
- किस शासक ने सिंहासन पर बैठने के लिए अपने बड़े भाई की हत्या की थी– **अशोक**
- सम्राट अशोक की उस पत्नी का नाम क्या था जिसने उसे प्रभावित किया था– **कारुवाकी**
- अशोक ने सभी शिलालेखों में एक रुपया से किस प्राकृत का प्रयोग किया था– **मागधी**
- बिंदुसार ने विद्रोहियों को कुचलने के लिए अशोक को कहाँ भेजा था– **तक्षशिला**
- किस सम्राट का नाम 'देवान प्रियादर्शी' था– **सम्राट अशोक**

RAMKESHeducation.com

- किस राजा ने कलिंग के युद्ध में नरसंहार को देखकर बौद्ध धर्म अपना लिया था– **अशोक ने**
- किस मौर्य राजा ने दक्कन पर विजय प्राप्त की थी– **कुणाल ने**
- मेगास्थनीज द्वारा अपनी पुस्तक में समाज को कितने भागों में बाँटा गया था– **पाँच**
- 'अर्थशास्त्र' किसके संबंधित है– **राजनीतिक नीतियों से**
- किस शासक ने पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया– **चंद्रगुप्त मौर्य ने**
- पाटलिपुत्र में चंद्रगुप्त का महल किसका बना था– **लकड़ी का**
- किस अभिलेख से यह सिद्ध होता है कि चंद्रगुप्त का प्रभाव पश्चिम भारत तक फैला हुआ था– **रुद्रदमन का जूनागढ़ अभिलेख**
- सर्वप्रथम भारतीय साम्राज्य किसने स्थापित किया– **चंद्रगुप्त मौर्य ने**
- किस स्तंभ में अशोक ने स्वयं को मगध का सम्राट बताया है– **भाब्रू स्तंभ**
- उत्तराखंड में अशोक का शिलालेख कहाँ स्थित है– **कालसी में**
- अशोक के शिलालेखों को पढ़ने वाला प्रथम अंग्रेज कौन था– **जेम्स प्रिंसेप**
- कलिंग युद्ध की विजय तथा क्षत्रियों का वर्णन किया शिलालेख में है– *13*वें **शिलालेख में** *(XIII)*
- कौन-सा शासक जनता के संपर्क में रहता था– **अशोक**
- किस ग्रंथ में चंद्रगुप्त मौर्य के लिए 'वृषल' शब्द का प्रयोग किया गया है– **मुद्राराक्षस**
- **किस राज्यादेश में अशोक के व्यक्तिगत नाम का उल्लेख मिलता है**– मास्की
- **श्रीनगर की स्थापना किस मौर्य शासक ने की**– अशोक
- किस ग्रंथ में शुद्रों के लिए 'आर्य' शब्द का प्रयोग हुआ है– **अर्थशास्त्र में**
- किसने पाटलिपुत्र को 'पोलिब्रोथा' कहा था– **मेगास्थनीज ने**
- मौर्य काल में 'एग्रनोमाई' किसको कहा जाता था– **सड़क निर्माण अधिकारी को**
- अशोक के बारे में जानने के लिए महत्पूर्ण स्रोत क्या है– **शिलालेख**
- 'भारतीय लिखने की कला नहीं जानते हैं' यह किसने कहा था– **मेगास्थनीज ने**
- बिंदुसार की मृत्यु के समय अशोक एक प्रांत का गवर्नर था, वह प्रांत कौन-सा था– उज्जैन
- किसने अपने पुत्र व पुत्री को बौद्ध धर्म के प्रचार व प्रसार हेतु श्रीलंका भेजा– अशोक ने
- कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र कितने अभिकरणों में विभाजित है– *15*
- अशोक का अभिलेख भारत के अलावा किस अन्य स्थान पर भी पाया गया है– अफगानिस्तान
- किस शिलालेख में अशोक ने घोषणा की, "सभी मनुष्य मेरे बच्चे है"– प्रथम पृथक

RAMKESHeducation.com

Go – RAMKESHeducation.com scan this code

RAMKESHeducation.com